रही हुई प्वाइंट्स 8/1/1967 :– यह मनुष्य से देवता बनने की कितनी बड़ी यूनिवर्सिटी है। गवर्मेंट से भी कितना माथा मारना पड़ता है। पूछेंगे, तुम्हारा खर्चा कैसे चलता है? अरे, ब्रह्माकुमार–कुमारियाँ इतने ढेर बच्चे हैं। तुम खर्चा पूछने आए हो। बोर्ड पर देखा है कि क्या लिखा हुआ है? बड़ी वण्डरफुल नॉलेज है। बाप भी वण्डरफुल है ना। रांझू रमजबाज़ का नाम सुना है। बच्चों को भी रांझू रमज़बाज बनाते हैं। विश्व के मालिक तुम कैसे बनते हो? शिवबाबा को कहेंगे श्री–2। ऊँच ते ऊँच है ना। ल०ना० को कहेंगे श्री लक्ष्मी, श्री नारायण। यह अच्छी रीति धारण करने की बातें हैं। बाप कहते हैं मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। यह है सच्ची–2 अमरकथा। सिर्फ एक पार्वती को ही थोड़े ही अमरकथा सुनाई होगी। कितने ढेर मनुष्य अमरनाथ पर जाते हैं। है सब ठगी। बच्चे बाप के सम्मुख आए हैं रिफ्रेश होने। फिर सबको समझाना, रिफ्रेश करना है। सेन्टर खोलने हैं। बाप कहते हैं तीन पैर पृथ्वी का लेकर हॉस्पिटल कम यूनिवर्सिटी खोलनी है। इसमें खर्चा तो कुछ भी है नहीं। हेल्थ–वेल्थ और हैपीनेस एक सेकेण्ड में मिल जाती है। बच्चा जन्मा और वारिस हुआ। तुमको भी निश्चय हुआ और विश्व के मालिक बने। फिर है पुरुषार्थ पर मदार। अच्छा, ओम शांति। बच्चों को प्यार।